INDEX

प्राचीन भारत का इतिहास

प्रागैतिहासिक काल	आद्य ऐतिहासिक काल	ऐतिहासिक काल
(मानव लेखन कला से अपरिचित) उदा.- पाषाणकाल	(लिपि का विकास, पढ़ने में असमर्थ) उदा.- सिन्धु घाटी सभ्यता	(लिपि का विकास व पढ़ने में समर्थ) उदा.- वर्तमान इतिहास

क्रं.	विषय सूची	पृष्ठ
01.	**भारतीय इतिहास के स्त्रोत**	01 – 07
02.	**पाषाणकाल** ➥ मानव की उत्पत्ति ➥ पाषाणकाल ↳ पुरापाषाण काल ↳ मध्य-पाषाण काल ↳ नवपाषाण काल ↳ ताम्रपाषाण काल ➥ पूर्व सैंधवकालीन संस्कृतियाँ	08 – 13
03.	**हड़प्पा सभ्यता** ➥ परिचय एवं विस्तार ➥ विशेषताएँ ↳ भौगोलिक स्थिति (प्रमुख स्थल खोजकर्त्ता) ↳ नगरीय नियोजन ↳ सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति ↳ सभ्यता का पतन	14 – 21
04.	**वैदिक सभ्यता** ➥ ऋग्वैदिक काल ➥ उत्तरवैदिक काल	22 – 33
05.	**धार्मिक आन्दोलन** ➥ जैन धर्म ➥ बौद्ध धर्म ➥ वैष्णव धर्म ➥ शैव धर्म ➥ शाक्त धर्म	34 – 44

WINNERS

क्रं.	विषय सूची	पृष्ठ
06.	**महाजनपद काल** ➥ मगध साम्राज्य ➥ 16 महाजनपद ➥ मगध साम्राज्य के प्रमुख वंश एवं विदेशी आक्रमण	45 – 50
07.	**मौर्य साम्राज्य** ➥ प्रमुख शासक (चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, अशोक एवं अन्य शासक) ➥ अशोक के अभिलेख शिलालेख ➥ मौर्य प्रशासन, मौर्यकालीन सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था ➥ मौर्य साम्राज्य का पतन	51 – 60
08.	**मौर्योत्तर काल** ➥ शुंग वंश, कण्व वंश, सातवाहन वंश	61 – 66
09.	**विदेशी आक्रमण** ➥ यूनानी आक्रमण, शक आक्रमण, पह्लव आक्रमण, कुषाण आक्रमण	67 – 72
10.	**गुप्त साम्राज्य**	73 – 89
11.	**गुप्तोत्तर काल** ➥ मौखरि राजवंश, पुष्यभूति वंश ➥ कन्नौज के लिए त्रिकोणीय संघर्ष ➥ गुप्तोत्तरकालीन सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक विकास	90 – 97
12.	**राजपूत काल (पूर्व मध्यकाल)** ➥ गुजरात का प्रतिहार राजवंश, कन्नौज का गहड़वाल वंश, दिल्ली तथा अजमेर का चौहान वंश, बुन्देलखण्ड के चन्देल वंश, मालवा का परमार वंश, गुजरात का चालुक्य वंश, बंगाल का पाल वंश, बंगाल का सेन वंश, कश्मीर के राजवंश, दक्षिण का राष्ट्रकूट वंश, उड़ीसा का पूर्वी गंग वंश,	98 – 112
13.	**संगम युग एवं दक्षिण भारत के राजवंश (पूर्व मध्यकाल)** ➥ संगमकाल, चोल राजवंश, पाण्ड्य राजवंश, दक्षिण भारत के राजवंश (पल्लव, राष्ट्रकूट, चालुक्य, चोल),	113 – 134
14.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण तथ्य**	135 – 136

WINNERS

क्रं.	विषय सूची	पृष्ठ
	मध्यकालीन भारत का इतिहास	
15.	**मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत** ➥ सल्तनतकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत ➥ मुगलकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत ➥ विदेशी यात्रियों का विवरण	137 – 140
16.	**इस्लाम धर्म की उत्पत्ति**	141
17.	**अरबों एवं तुर्कों का आक्रमण**	142 – 145
18.	**दिल्ली सल्तनत** ➥ गुलाम वंश ➥ खिलजी वंश ➥ तुगलक वंश ➥ सैय्यद वंश ➥ लोदी वंश ➥ सल्तनतकालीन प्रशासन ➥ सल्तनतकालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन ➥ सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य	146 – 168
19.	**विजयनगर साम्राज्य** ➥ संगम राजवंश ➥ सालुव वंश ➥ तुलुव वंश ➥ अराविडु वंश ➥ विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन एवं सामाजिक जीवन ➥ बहमनी साम्राज्य ➥ क्षेत्रीय शक्तियों का उदय (जौनपुर, कश्मीर, मालवा, मेवाड़, गुजरात व बंगाल)	169 – 185
20.	**भक्ति एवं सूफी आन्दोलन** ➥ भक्ति आन्दोलन ➥ सूफी आन्दोलन	186 – 194
21.	**मुगल साम्राज्य** ● बाबर ● हुमायूँ ● शेरशाह ● अकबर ● जहाँगीर ● शाहजहाँ ● औरंगजेब ● मुगलकालीन संगीत व चित्रकला ➥ मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था ➥ मुगलकालीन शिक्षा एवं साहित्य ➥ उत्तरकालीन मुगल सम्राट	195 – 225

WINNERS

क्रं.	विषय सूची	पृष्ठ
22.	मराठा साम्राज्य ➥ उदय के कारण ➥ छत्रपति शिवाजी एवं उनके विजय अभियान ➥ शिवाजी की शासन व्यवस्था ➥ शिवाजी के उत्तराधिकारी	226 – 231
	आधुनिक भारत का इतिहास	
23.	भारत में यूरोपिय शक्तियों का आगमन	232 – 237
24.	बंगाल में अंग्रेजों का आधिपत्य	238 – 241
25.	आंग्ल-मैसूर संघर्ष	242 – 244
26.	आंग्ल-मराठा संघर्ष	245 – 247
27.	सिख गुरू व आंग्ल-सिख संघर्ष	248 – 251
28.	महत्वपूर्ण गवर्नर जनरल तथा वायसराय	252 – 256
29.	सन् 1857 ई. की क्रान्ति	257 – 261
30.	किसान एवं जनजातीय विद्रोह	262 – 265
31.	सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन	266 – 271
32.	स्वतंत्रता संग्राम की शुरूआत एवं कांग्रेस पार्टी	272 – 279
33.	राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रथम चरण (1905–1919) ➥ उग्रवादी एवं राष्ट्रीय आन्दोलन ➥ बंगाल विभाजन तथा स्वदेशी आन्दोलन ➥ मुस्लिम लीग ➥ कांग्रेस का विभाजन ➥ मार्ले-मिन्टो सुधार ➥ दिल्ली दरबार ➥ प्रथम विश्व युद्ध तथा क्रान्तिकारी गतिविधियाँ ➥ कामागाटामारू प्रकरण ➥ होमरूल आन्दोलन ➥ मॉण्टेग्यू घोषणा	280 – 287

WINNERS

क्रं.	विषय सूची	पृष्ठ
34.	**राष्ट्रीय आन्दोलन का दूसरा चरण (1919–1939)** ➥ राष्ट्रवाद के पुनः उभरने के कारण ➥ मॉण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम ➥ महात्मा गाँधी का अभ्युदय एवं उनसे संबंधित घटनाक्रम ➥ रौलेट एक्ट ➥ जलियांवाला बाग हत्याकांड ➥ खिलाफत आन्दोलन ➥ असहयोग आन्दोलन ➥ चौरी-चौरा कांड ➥ स्वराज्य पार्टी ➥ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ➥ काकोरी षड्यंत्र ➥ नवजवान भारत सभा ➥ साइमन कमीशन ➥ साण्डर्स हत्याकांड एवं केन्द्रीय बम विस्फोट की घटना ➥ चटगाँव शस्त्रागार लूट ➥ नेहरू रिपोर्ट ➥ कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन ➥ सन् 1929 ई. का राजनैतिक घटना-क्रम ➥ लाहौर अधिवेशन ➥ सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं डांडी मार्च ➥ प्रथम गोलमेज सम्मेलन ➥ गाँधी-इरविन समझौता ➥ कांग्रेस का कराची अधिवेशन, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन ➥ द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन ➥ साम्प्रदायिक पंचाट तथा पूना समझौता, गाँधीजी के हरिजन कार्यक्रम ➥ तृतीय गोलमेज सम्मेलन, 1935 का भारत सरकार अधिनियम, प्रांतीय चुनाव तथा मंत्रिमंडल का गठन, ➥ त्रिपुरी संकट	288 – 309
35.	**राष्ट्रीय आन्दोलन का तीसरा चरण (1939–1947)** ➥ द्वितीय विश्व युद्ध तथा कांग्रेस ➥ अगस्त प्रस्ताव ➥ मुस्लिम लीग तथा पाकिस्तान की मांग	310 – 322

WINNERS

क्रं.	विषय सूची	पृष्ठ
	➥ व्यक्तिगत सत्याग्रह ➥ अटलांटिक चार्टर, क्रिप्स मिशन ➥ भारत छोड़ो आन्दोलन ➥ आजाद हिन्द फौज तथा सुभाषचन्द्र बोस ➥ राजगोपालाचारी फार्मूला ➥ देसाई-लियाकत समझौता ➥ वैवेल योजना एवं शिमला सम्मेलन ➥ भारत में चुनाव एवं शाही नौसेना विद्रोह ➥ कैबिनेट मिशन ➥ अंतरिम सरकार का गठन ➥ एटली की घोषणा ➥ माउण्टबेटन योजना ➥ भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 ➥ बाल्कान प्लान	
36.	भारत में शिक्षा तथा प्रेस का विकास	323 – 328
37.	ब्रिटिश शासन का भारत पर प्रभाव एवं विविध	329 – 336
38.	आजादी के पश्चात् की प्रमुख घटनाएँ ➥ रियासतों का एकीकरण ➥ आजादी के पश्चात् समृद्धि की नवीन अवधारणाएँ ➥ जमींदारी उन्मूलन तथा भूदान आन्दोलन ➥ भारत-पाकिस्तान संबंध ➥ भारत-चीन, भारत-श्रीलंका, भारत-भूटान संबंध	337 – 340
39.	विश्व इतिहास की प्रमुख घटनाएँ ➥ विश्व की प्रमुख सभ्यताएँ ➥ पुनर्जागरण ➥ फ्रांस की क्रान्ति, रूस की क्रान्ति, इंग्लैण्ड की क्रान्ति ➥ प्रथम विश्व युद्ध तथा द्वितीय विश्व युद्ध	341 – 344

* * *

WiNNERS

अध्याय 01

भारतीय इतिहास के स्त्रोत

भारत के इतिहास का गौरव विश्व प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में भारत 'सोने की चिड़िया' के रूप में प्रसिद्ध था। भारत अपनी कला, संस्कृति एवं आध्यात्मिक ज्ञान से समूचे विश्व को वर्तमान में भी मार्गदर्शित कर रहा है। ऐसे विशिष्ट भारतीय इतिहास को जानने के लिए विभिन्न ऐतिहासिक स्त्रोतों का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के माध्यम से किया जा सकता है:-

ऐतिहासिक स्त्रोत

- ऐतिहासिक ग्रन्थ
- धार्मिक ग्रन्थ
- पुरातात्विक स्त्रोत
- विदेशी यात्रियों के विवरण

ऐतिहासिक ग्रन्थ

ग्रन्थ	रचनाकार	विशेषताएँ
हर्षचरित	बाणभट्ट	हर्षवर्धन के जीवन का विशद् वर्णन मिलता है।
अर्थशास्त्र	चाणक्य	15 अधिकरण, 180 प्रकर्ण में इनका विभाजन, इसमें मौर्यकाल की शासन पद्धति का विशद् वर्णन किया गया है।
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	चाणक्य तथा नंदमंत्री राक्षस का वर्णन मिलता है।
अष्टाध्यायी	पाणिनी	संस्कृत भाषा का प्रथम ग्रन्थ एवं मौर्य साम्राज्य की जानकारी।
राजतरंगिणी	कल्हण	प्राचीन समय से 12वीं सदी तक के कश्मीर के इतिहास का वर्णन है, यह 8 सर्ग में विभाजित है।
संगम साहित्य	प्रथम तीन शताब्दी में रचित	चोल, चेर एवं पाण्ड्य राजवंशों की जानकारी प्राप्त होती है।
विक्रमांकदेव चरित	बिल्हण	कल्याणी वंश के चालुक्यों के इतिहास का वर्णन मिलता है।
रामचरित	संध्याकरनंदी	संस्कृत भाषा में रामचरित्र का वर्णन मिलता है।
पृथ्वीराजरासो	चंदबरदायी	वीर रस में, पृथ्वीराज चौहान के जीवन का वर्णन।
स्वप्नवासवदत्त	भास	उदयन/चण्डप्रदोत के आपसी संबंध का उल्लेख मिलता है।
कथासरितसागर	सोमदेव	गुणाढय की कथा का रोचक वर्णन मिलता है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें 10 अंक शामिल है, इस नाटक की पृष्ठभूमि पाटलिपुत्र है।
गार्गीसंहिता	कात्यायन	गार्गीसंहिता से यूनानी आक्रमण की जानकारी मिलती है।
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	शुंग वंश एवं मौर्य वंश की जानकारी प्राप्त होती है।
कामन्दकीय नीतिशास्त्र	कामन्दक	6वीं शताब्दी ई.पू. की जानकारी प्राप्त होती है।
प्रबन्धचिन्तामणि	मेरुतुंगाचार्य	सातवाहन वंश, पाल वंश व सेन वंश की जानकारी प्राप्त होती है।
कीर्तिकौमुदि	सोमेश्वर	चालुक्य वंश की जानकारी प्राप्त होती है।
बसन्तविलास	वालचन्द्र	चालुक्य वंश की जानकारी प्राप्त होती है।
अवन्तिसुन्दरी कथा	दण्डी	पल्लवकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।
पृथ्वीराजविजय	जयानक	पृथ्वीराज-तृतीय की जानकारी प्राप्त होती है।
हम्मीर मदमर्दन	जयसिंह सूरी	हम्मीरदेव चौहान के साम्राज्य का वर्णन

➥ **सामवेद–** इसे संगीत का जनक कहा जाता है।
उच्चारणकर्त्ता– उद्गाता

➥ **अथर्ववेद–** **रचना–** अर्थवा ऋषि तथा अंगरिस। इसमें जादू-टोना, तंत्र-मंत्र का वर्णन है। 20 अध्याय, 731 सूक्त, लगभग 6000 मंत्र का वर्णन।

वेद तथा उनके ब्राह्मण ग्रन्थ

यज्ञ के विधान को सरल बनाने के लिए विभिन्न काल खण्डों में इनकी रचना हुई।

क्र.	वेद	ब्राह्मण ग्रन्थ
1.	ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषितिकीय
2.	सामवेद	पंचविश, जैमिनीय
3.	यजुर्वेद	शतपथ, आयुर्वेद
4.	अथर्ववेद	गोपथ

उपनिषद

इसमें ब्रह्मज्ञान एवं अध्यात्म पर विस्तृत रूप से चर्चा तथा इससे दार्शनिक विचारों का संग्रह एवं कर्मकाण्डों का विरोध समाहित है।

➥ **संख्या 108**

क्र.	उपनिषद	विशेषताएँ
1.	वृहदारण्यक	सबसे बड़ा
2.	माडुक्य	सबसे छोटा
3.	मुण्डकोपनिषद	सत्यमेव जयते
4.	जवालोपनिषद	आश्रम व्यवस्था

वेदांग

ये वेदों के अंग कहे जाते हैं एवं वेदों के अध्ययन में सहायता करते हैं। इनकी कुल संख्या 6 है।

➥ **व्याकरण (मुख)** ➥ **शिक्षा (नाक)**
➥ **कल्प (हाथ)** ➥ **निरुक्त (कान)**
➥ **छन्द (पैर)** ➥ **ज्योतिष (आँख)**

कल्प

- **श्रोत सूत्र** (यज्ञ विधि विधान का वर्णन)
- **गृह सूत्र** (मानव के कर्त्तव्यों का वर्णन)
- **धर्म सूत्र** (सामाजिक, धार्मिक कानून का वर्णन)

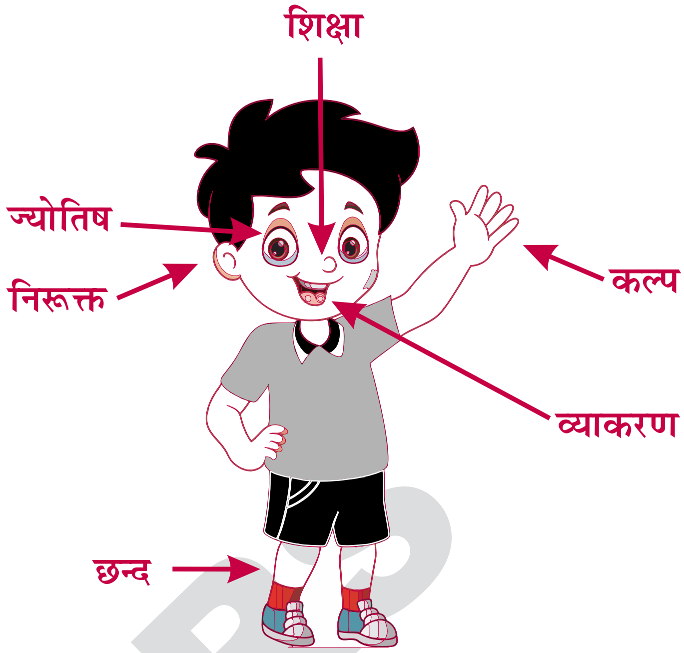

पुराण

इनमें भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा वर्णन मिलता है। इनकी संख्या 18 है।

नोट– इनमें सबसे प्राचीन मत्स्य पुराण है।

पुराण	संबंधित वंश
➤ विष्णु पुराण	मौर्य वंश तथा मेघनाथ की तपोस्थली (धार) का वर्णन मिलता है।
➤ मत्स्य पुराण	आन्ध्र सातवाहन (सबसे प्रथम रचित पुराण) की जानकारी प्राप्त होती है।
➤ वायु पुराण	गुप्त वंश की जानकारी प्राप्त होती है।

● **महाकाव्य–** इसका शाब्दिक अर्थ महान काव्य होता है। इसमें नायक की कथा, उद्देश्य एवं भाषा-शैली महान एवं विशिष्ट होती है। उदा.– रामायण (वाल्मीकि), महाभारत (वेदव्यास) एवं बुद्धचरित (अश्वघोष)।

➤ **रामायण–** वाल्मीकि (रचयिता)
श्लोकों की संख्या– 24000,
काण्डों की संख्या– 7

➤ **महाभारत–** महर्षि वेदव्यास
प्रथम नाम– जयसंहिता
बाद का नाम– भारत
मूलतः श्लोकों की संख्या– 8800
बाद में श्लोकों की संख्या– 24000
(वर्तमान में एक लाख दस हजार लगभग)

WINNERS

अध्याय
02 पाषाणकाल

पाषाणकाल
1. **पुरापाषाण काल** (5 लाख ई.पू. से 10 हजार ई.पू. तक)
   - **निम्न पुरापाषाण काल** (5 लाख ई.पू. से 50 हजार ई.पू. तक)
   - **मध्य पुरापाषाण काल** (50 हजार ई.पू. से 40 हजार ई.पू. तक)
   - **उच्च पुरापाषाण काल** (40 हजार ई.पू. से 10 हजार ई.पू. तक)
2. **मध्यपाषाण काल** (10 हजार ई.पू. से 6 हजार ई.पू. तक)
3. **नवपाषाण काल** (6 हजार ई.पू. से 1 हजार ई.पू. तक)

मानव की उत्पत्ति

मानव की उत्पत्ति का काल 10 से 14 मिलियन ई.पू. बताया गया है। आधुनिक मानव का उद्भव ई. पूर्व से 30,000 वर्ष पूर्व हुआ था। सबसे पुराने मानव का अवशेष अफ्रीका से प्राप्त हुआ था। इसलिए अफ्रीका महाद्वीप को आदिमानव की जन्मस्थली माना जाता है।

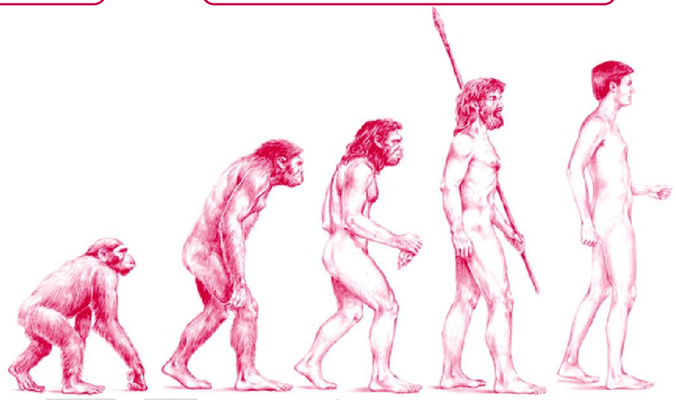

- **प्रथम पुरूष का अवशेष-** रामापिथेकस (उत्तर भारत)
- **प्रथम महिला का अवशेष-** शिवपिथेकस (उत्तर भारत)
- **भारत में सबसे पहले मानव का अवशेष शिवालिक रेंज** से प्राप्त हुआ था।

पुरापाषाण काल

निम्न-पुरापाषाण काल

- इस दौरान अधिकांश समय हिमयुग में बीता।
- इस काल में मानव जीवन अस्थिर था। भोजन एवं वस्त्र, आवास की व्यवस्था नहीं थी।
- इस काल में मानव भोजन संग्राहक था, उत्पादक नहीं।
- कालान्तर में अग्नि का आविष्कार हुआ एवं मानव आखेट (शिकार), पत्थर का प्रयोग करने लगा।

संस्कृति के केन्द्र-
- **उत्तर-पश्चिम-** सोहनघाटी या पेवल चौपर, चापिंग संस्कृति।
- **दक्षिण भारत-** मद्रासियन या हेण्डएक्स लीवर।
- इसके अतिरिक्त नर्मदाघाटी, भीमबेटिका (मध्यप्रदेश), बेलनघाटी (मिर्जापुर), कर्नाटक, बिहार, बंगाल, उड़ीसा।

मध्य-पुरापाषाण काल

इस दौरान अधिक उपयोगी उपकरण का निर्माण हुआ-
- इस काल में क्वार्टज़ाइट के स्थान पर जैस्पर चर्ट (फल्कों) का निर्माण हुआ, इसलिए इसको फलक संस्कृति भी कहते हैं।
- मानव खाद्य संग्राहक हो गया एवं गुफाओं में वास करने लगा। अग्नि का प्रयोग उसने बड़े पैमाने पर शुरू किया।
- **प्रमाण-** बेलनघाटी (उत्तरप्रदेश), कृष्णाघाटी, सोनघाटी आदि।

भारत में प्रमुख पाषाणकालीन स्थल

करते हुए कुत्ते का पदचिह्न, अलंकृत हाथी, लिपिस्टिक के अवशेष, हड्डियों की वस्तुएँ, जला हुआ कपाल, चार पहियों की गाड़ी, कुत्ते और बिल्ली के पंजों के निशान, मिट्टी के मोर की आकृति आदि प्राप्त हुए।

- **कालीबंगन-** कालीबंगन का शाब्दिक अर्थ है- काले रंग की चूड़ियाँ। यह पुरातात्विक स्थल राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के बाएँ तट पर स्थित है। इसकी खोज 1953 ई. में बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर द्वारा की गई थी।

प्राप्त साक्ष्य-

➥ **अग्निकुण्ड, भूकम्प के साक्ष्य, शल्य चिकित्सा के साक्ष्य, घोड़े के अस्थिपंजर, मिट्टी की चूड़ियाँ, खिलौना गाड़ी, साँड की खण्डित मूर्ति, सेलखड़ी की मोहरें, अलंकृत ईंटे, शव विसर्जन के 37 उदाहरण, बच्चे की खोपड़ी, भूकम्प के प्राचीनतम साक्ष्य, जुते हुए खेत आदि।**

नोट- सिन्धु घाटी सभ्यता का एकमात्र स्थल है, जिसका पूरा फर्श अलंकृत ईंटों से सुसज्जित पाया गया।

- **बनावली-** यह हरियाणा के हिसार जिले में रंगोई नदी के तट पर स्थित स्थल है। इसकी खोज रवीन्द्रसिंह विस्ट ने की थी।

प्राप्त साक्ष्य-

➥ **मिट्टी से बने हल, मकान से धावन पात्र, सोने, लाजवर्द, कार्नेनियन के मनके, मिट्टी के बर्तन, मनुष्यों एवं पशुओं की मूर्तियाँ, चर्ट की फलक, ताँबे के बाणाग्र, खिलौने आदि।**

- **धौलावीरा-** धौलावीरा की खुदाई 1990-91 ई. आर.एस. विस्ट के नेतृत्व में हुई थी। यह गुजरात में लूनी नदी के तट पर स्थित पुरातात्विक स्थल है। इसको वर्ष 2021 में यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल में 40वाँ स्थान दिया। यह तीन भागों में विभाजित अब तक खोजे गए स्थलों में एकमात्र स्थल है।

प्राप्त साक्ष्य-

➥ **उन्नत जल प्रबंधन, बहुउद्देश्यीय मैदान, बौद्ध स्तूप जैसी अर्द्धगोलाकार संरचनाएँ एवं चमकीली पॉलिशदार पत्थर, सैंधव लिपि के दस ऐसे अक्षर मिले है जो काफी बड़े रूप में, साईन बोर्ड अर्थात् सूचना पट्टिका में लिखित है, सुनामी के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए है।**

नोट- ● सर्वाधिक मुहरे- हड़प्पा, ● सर्वाधिक स्थल- गुजरात

धौलावीरा विश्व विरासत स्थल (40वाँ) 2021

हड़प्पा सभ्यता का नगरीय नियोजन

सिन्धुघाटी सभ्यता के विकास क्रम के चतुर्थ चरण (2300 से 1700 ई.पू.) के कालखण्ड में नगरीय सभ्यता का स्वरूप व्यवस्थित रूप से सामने आया।

नगरीय सभ्यता तत्व/घटक

➥ कृषि अधिशेष

➥ वस्तु विनिमय का प्रचलन।

➥ व्यापार, वाणिज्य एवं यातायात साधनों का विकास।

➥ गैर-कृषक वर्ग का उदय तथा श्रम का विभाजन।

➥ सुव्यवस्थित कर प्रणाली।

नगरीय नियोजन की विशेषताएँ

➥ नदियों के किनारे अधिकांश नगर बसे थे, यथा- हड़प्पा (रावी), मोहनजोदड़ो (सिन्धु), कालीबंगा (घग्घर) आदि। परिणाम स्वरूप नदियों के माध्यम से तत्कालीन यातायात सुगम हुआ।

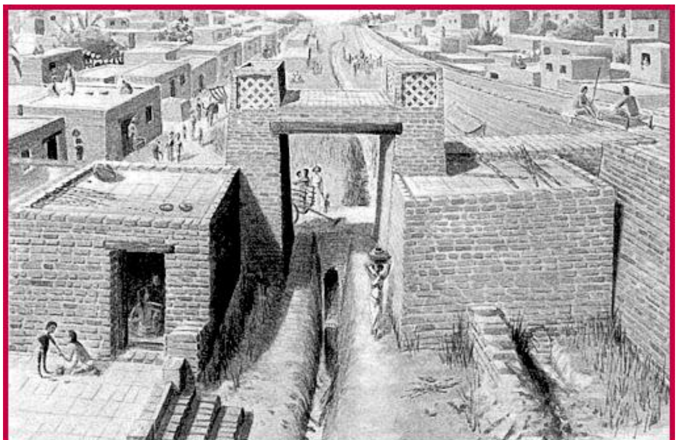

नगरीय नियोजन का बेहतर स्वरूप

वेद	उपनिषद
ऋग्वेद	ऐतरेयोपनिषद
यजुर्वेद	बृहदारण्यकोपनिषद
शुक्ल यजुर्वेद	ईशावास्योपनिषद
कृष्ण यजुर्वेद	मैत्रायणीउपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद्, कठोपनिषद, श्वेताश्वरोपनिषद
सामवेद	केनोपनिषद, वाष्कल उपनिषद, छान्दोग्योपनिषद,
अथर्ववेद	मुंडकोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मांडूक्योपनिषद

वेदांग

- ये वेदों के अंग हैं, जो वेदों के अध्ययन में सहायता करते है। इनमें कम शब्दों में अधिक तथ्यों को समाहित करने का प्रयास किया गया है।
- इनकी कुल संख्या 6 है।
  - **व्याकरण (मुख)**
  - **शिक्षा (नाक)**
  - **कल्प (हाथ)**
  - **निरुक्त (कान)**
  - **छन्द (पैर)**
  - **ज्योतिष (आँख)**

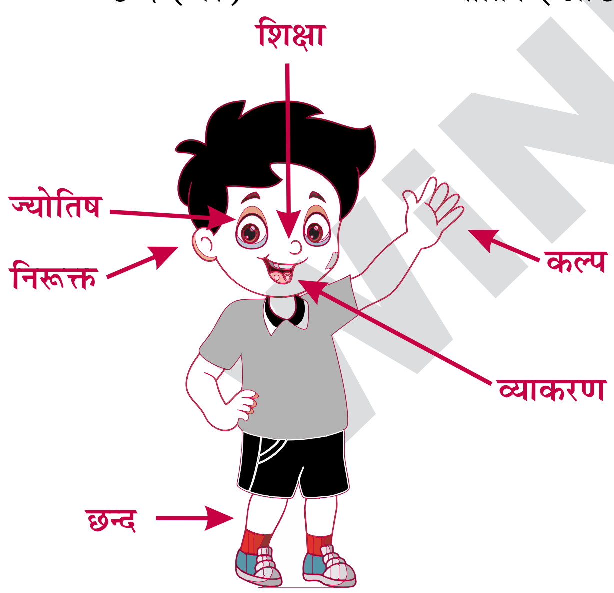

- **कल्प**- इसकी निम्न तीन शाखाएँ हैं-

कल्प

- **श्रोत सूत्र** (यज्ञ विधि विधान का वर्णन)
- **गृह सूत्र** (मानव के कर्त्तव्यों का वर्णन)
- **धर्म सूत्र** (सामाजिक, धार्मिक कानून का वर्णन)

सूत्र साहित्य

- इनकी रचना 600-300 ई.पू. में की गई थी।
- इनकी कुल संख्या तीन है-
  - **स्त्रोत सूत्र**- इसमें राजाओं एवं उच्च वर्णो के धनाढ्य पुरूषों के द्वारा यज्ञविधि का वर्णन है।
  - **गृह सूत्र**- इसमें मानव के कर्त्तव्यों तथा संस्कारों का वर्णन मिलता है।
  - **शुल्ब सूत्र**- इसमें यज्ञ, हवन, वेदी निर्माण के विधि-विधान एवं ज्यामितिमापन का वर्णन मिलता है।
- **शिक्षा**- वैदिक मंत्रों के उच्चारण हेतु इसका निर्माण किया गया।
- **व्याकरण**- इसके अन्तर्गत व्याकरण के नियमों, सन्धि, समास, धातुओं की रचना, उपसर्ग, प्रत्यय के प्रयोग से संबंधित नियम बताए हैं। इससे संबंधित ग्रन्थ- अष्टाध्यायी है जिसकी रचना पाणिनी ने की है।
- **निरूक्त**- शब्दों की उत्पत्ति एवं निर्वचन को बतलाने वाले शास्त्र को निरूक्त कहते हैं।
- **छन्द**- वैदिक साहित्य में जगती, वृहती तथा गायत्री साहित्य में छन्दों का प्रयोग किया गया है।
- **ज्योतिष**- इसमें ज्योति शास्त्र से संबंधित अध्ययन को बताया गया है। इसके आचार्य **लगध मुनि** है।

पंच महायज्ञ

- ग्रहस्थ आश्रम के अन्तर्गत निम्न पाँच महायज्ञों तथा अनुष्ठानों का वर्णन किया गया है-
  - **ब्रह्मयज्ञ**
  - **देव यज्ञ**
  - **पितृ यज्ञ**
  - **भूत यज्ञ**
  - **अतिथि यज्ञ**
- **ब्रह्म यज्ञ**- इसे सर्वश्रेष्ठ महायज्ञ माना जाता है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के बाद में यदि कोई मनुष्य वेदों, ब्राह्मणों, उपनिषदों, आरण्यकों, पुराणों इत्यादि ग्रंथों का अध्ययन अध्यापन करता है तो वह ब्रह्म यज्ञ या ऋषि यज्ञ कहलाता है।
- **पितृ यज्ञ**- कोई मनुष्य अपने मृत परिजनों को पिण्डदान/जलांजलि अर्पित करता है अथवा जीवित माता-पिता की सेवा करता है तो वह पितृ यज्ञ कहलाता है।
- **देव यज्ञ**- मनुष्य प्रतिदिन सुबह-शाम अपने इष्ट देव की उपासना करता है तथा अग्नि हवन भी करता है। इस कार्य

WINNERS

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।

सूची-I (महाजनपद)		सूची-II (राजधानी)	
A.	गांधार	1.	मथुरा
B.	शूरसेन	2.	कौशाम्बी
C.	वत्स	3.	श्रावस्ती
D.	कोशल	4.	तक्षशिला

कूट-	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	4	1	2	3	(b)	1	2	3	4
(c)	4	1	3	2	(d)	4	3	2	1

2. महाजनपदों की कितनी रियासतें थी?

(a) 15 (b) 16
(c) 17 (d) 18

3. महाजनपद मगध में से निम्न नदियाँ बहती थी?

(a) गंगा और सोन (b) क्षिप्रा और काली
(c) रावी और चिनाब (d) यमुना और पार्वती

4. उज्जैन का प्राचीन नाम था-

(a) अवन्तिका (b) तक्षशिला
(c) कान्यकुब्ज (d) धान्यकटक

5. नन्द वंश का संस्थापक कौन था?

(a) महापद्मनन्द (b) कालाशोक
(c) घनानन्द (d) नागार्जुन

6. मगध की प्रथम राजधानी कौन-सी थी?

(a) पाटलिपुत्र (b) वैशाली
(c) गिरिब्रज/राजगृह (d) चम्पा

7. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए-

सूची-I (महाजनपद)		सूची-II (आधुनिक क्षेत्र)	
A.	मगध	1.	पटना व गया के जिले
B.	वत्स	2.	इलाहाबाद
C.	कोशल	3.	अवध
D.	अवन्ति	4.	मालवा

कूट-	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	1	2	4	3
(c)	2	1	3	4	(d)	2	1	4	3

8. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।

सूची-I (शासक)		सूची-II (वंश)	
A.	बिम्बिसार	1.	हर्यक वंश
B.	कालाशोक	2.	शिशुनाग वंश
C.	महापद्मनन्द	3.	मौर्य वंश
D.	बिन्दुसार	4.	नन्द वंश

कूट-	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	1	2	4	3
(c)	1	4	3	2	(d)	1	3	4	2

9. किस शासक द्वारा सर्वप्रथम पाटलिपुत्र का राजधानी के रूप में चयन किया गया?

(a) अजातशत्रु द्वारा (b) कालाशोक द्वारा
(c) उदायिन द्वारा (d) कनिष्क द्वारा

10. सोलह महाजनपदों की सूची उलपब्ध है-

(a) महाभारत में (b) अंगुत्तर निकाय में
(c) छान्दोग्य उपनिषद में (d) संयुक्त निकाय में

11. प्रथम मगध साम्राज्य का उत्कर्ष किस सदी में हुआ था?

(a) चौथी सदी ई.पू. (b) छठी सदी ई.पू.
(c) दूसरी सदी ई.पू. (d) पहली सदी ई.पू.

12. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए-

सूची-I (राजा)		सूची-II (राज्य)	
A.	प्रद्योत	1.	मगध
B.	उदायिन	2.	वत्स
C.	प्रसेनजित	3.	अवन्ति
D.	अजातशत्रु	4.	कोशल

कूट-	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	2	3	4	(b)	4	3	2	1
(c)	3	2	4	1	(d)	4	1	3	2

13. पहला ईरानी शासक जिसने भारत के कुछ भाग को अपने अधीन किया था?

(a) साइरस (b) कोम्बिसिस
(c) डेरियस (d) जेरसिस (यक्षार्थ)

14. निम्न राजाओं पर विचार कीजिए-

1. अजातशत्रु 2. बिन्दुसार 3. प्रसेनजित

इनमें से कौन-कौन बुद्ध के समकालीन थे?

(a) केवल 1 (b) 2 और 3
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

15. मगध सम्राट बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को किस राज्य के राजा की चिकित्सा के लिए भेजा था?
(a) कोशल (b) अंग
(c) अवन्ति (d) वैशाली

16. किस मगध सम्राट ने अंग का विलय अपने राज्य में कर लिया?
(a) बिम्बिसार (b) अजातशत्रु
(c) उदायिन (d) शिशुनाग

17. मगध साम्राज्य के बारे में निम्न कौन-सा सही नहीं है?
(a) पुराणों एवं महाकाव्यों के अनुसार इसकी स्थापना वृहद्रथ ने की।
(b) महापद्मनन्द ने इसे सर्वाधिक विस्तार प्रदान किया तथा 'सर्वक्षत्रांतक' (क्षत्रियों का अंत करने वाला) एवं 'इकराट' की उपाधि धारण की।
(c) गिरिव्रज, राजगृह, पाटलिपुत्र एवं वैशाली क्रमशः इसकी चार राजधानियाँ बनीं।
(d) इनमें से कोई नहीं

18. सिकन्दर के आक्रमण के समय उत्तर भारत पर निम्नलिखित राजवंशों में से किस एक का शासन था?
(a) नन्द (b) मौर्य
(c) शुंग (d) कण्व

19. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, ईसा पूर्व 6ठीं सदी के, प्रारंभ में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली नगर राज्य था?
(a) गांधार (b) कम्बोज
(c) काशी (d) मगध

20. निम्नलिखित में से किस एक नदी को पहले 'वितस्ता' नाम से जाना जाता था?
(a) तिस्ता (b) झेलम
(c) तुंगभद्रा (d) भरत

21. मगध के किस प्रारम्भिक शासक ने राज्यारोहण के लिए अपने पिता की हत्या की एवं इसी कारणवश अपने पुत्र द्वारा मारा गया?
(a) बिम्बिसार (b) अजातशत्रु
(c) उदायिन (d) नागदशक

22. विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में किसके द्वारा स्थापित किया गया?
(a) मौर्य (b) नन्द
(c) गुप्त (d) लिच्छवी

23. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।

सूची-I (महाजनपद)		सूची-II (राजधानी)	
A.	कुरू	1.	श्रावस्ती
B.	पांचाल	2.	कोशाम्बी
C.	कोशल	3.	अहिच्छत्र
D.	वत्स	4.	इन्द्रप्रस्थ

कूट-

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	1	2
(c)	3	4	2	1
(d)	4	2	3	1

24. निम्न में से कौन-सा एक बौद्ध ग्रन्थ सोलह महाजनपदों का उल्लेख करता है?
(a) अंगुत्तर निकाय (b) मज्झिम निकाय
(c) खुद्दक निकाय (d) दीर्घ निकाय

25. सिकन्दर का निधन हुआ था?
(a) वेवीलोन (b) कान्धार
(c) हेरात (d) मरकाना

उत्तरमाला

1 (a)	2 (b)	3 (a)	4 (a)	5 (a)	6 (c)	7 (a)	8 (b)	9 (c)	10 (b)
11 (b)	12 (c)	13 (c)	14 (c)	15 (c)	16 (a)	17 (d)	18 (a)	19 (d)	20 (b)
21 (b)	22 (d)	23 (b)	24 (a)	25 (a)					

❑ ❑ ❑

अध्याय
10 गुप्त साम्राज्य

गुप्त वंश
↓
श्री गुप्त (275-300 ई.)
↓
घटोत्कच (300-319-20 ई.)
↓
चन्द्रगुप्त प्रथम (319-325 ई.)
↓
समुद्रगुप्त (325-380 ई.)
↓
चन्द्रगुप्त-II (देवगुप्त) (380-414-15 ई.)
↓
गोविन्दगुप्त (तिरहुत)
↓
कुमारगुप्त प्रथम (महेन्द्रादित्य) (415-455 ई.)
↓
प्रभावती (वाकाटकों की रानी)
↓
स्कन्दगुप्त (विक्रमादित्य) (455-468 ई.)
↓
पुरूगुप्त (श्रीविक्रम) (468-469 ई.)
↓
घटोत्कचगुप्त
↓
नरसिंह गुप्त (बालादित्य) → कुमार गुप्त (विक्रमादित्य) → विष्णुगुप्त (अन्तिम शासक) | बुद्धगुप्त

गुप्त साम्राज्य (275-550 ई.)

प्राचीनकाल में स्वर्णिम काल के रूप में गुप्त काल जाना जाता है। गुप्तकाल अपने साहित्यकारों, स्थापत्यकला, मन्दिर निर्माण शैली, महान सम्राटों के कारण प्राचीन भारत में एक विशिष्ट स्थान रखता है। गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्रीगुप्त ने 275 ई. में की थी। उसके बाद उनका उत्तराधिकारी घटोत्कच्छ शासक बना, लेकिन वह योग्य शासक नहीं था। तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त-प्रथम (319-355 ई. में) महान शासक हुआ। चन्द्रगुप्त प्रथम ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की तथा 319 ई. में उसने गुप्त सवंत् चलवाया।

गुप्त साम्राज्य जानकारी के स्रोत-

गुप्त साम्राज्य के राजनैतिक विस्तार, कला संस्कृति, स्थापत्य आदि की जानकारी निम्न ऐतिहासिक स्रोतों से प्राप्त होती है-

अभिलेख-

- **चन्द्रगुप्त-द्वितीय-** मथुरा एवं गढ़वा अभिलेख।
- **समुद्रगुप्त-** प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख।
- **कुमारगुप्त-I-** मन्दसौर प्रशस्ति व बिलसद अभिलेख।
- **स्कन्दगुप्त-** जूनागढ़ अभिलेख, एरण अभिलेख।
- **बुद्धगुप्त-** पहाड़पुर का ताम्रपत्र अभिलेख।

आर्यभट्ट

कालिदास

चन्द्रगुप्त-द्वितीय

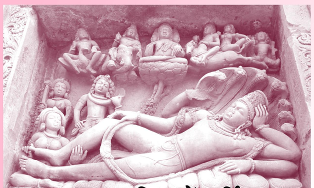
दशावतार मन्दिर में मूर्तिकला

देवगढ़ का दशावतार मन्दिर

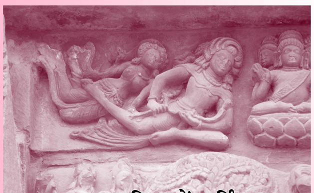
दशावतार मन्दिर में मूर्तिकला

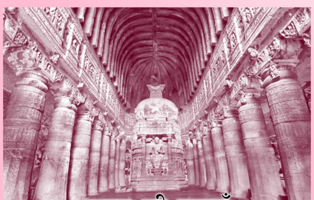
अजन्ता की गुफाएँ

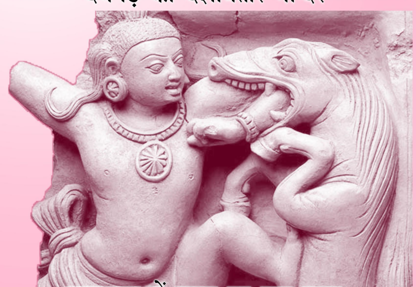
गुप्तकाल में कला पर एक नज़र